राष्ट्रीय संगोष्ठी: "हिंदी भाषा की समृद्धि: संभावनाएँ और चुनौतियाँ"

दिनांक: 23 सितम्बर, 2025

दिल्ली विश्वविद्यालय के भगिनी निवेदिता कॉलेज के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मंगलवार, दिनांक 23 सितंबर 2025 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था—“हिंदी भाषा की समृद्धि: संभावनाएँ और चुनौतियाँ”।

संगोष्ठी दो सत्रों में विभाजित थी। प्रथम सत्र का शुभारंभ भारतीय परंपरा के अनुसार दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। विश्वविद्यालय कुलगीत के पश्चात कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रूबी मिश्रा ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी भी भाषा को सीखने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए, किंतु हिंदी हमारी मातृभाषा है और हम सोचने-समझने का कार्य अपनी मातृभाषाओं में ही करते हैं।

विभाग प्रभारी डॉ. रीता नामदेव ने संगोष्ठी की संकल्पना तथा उसके आयोजन से जुड़े विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, असम से पधारीं डॉ. जोनाली बरुआ ने हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी धमनियों में संचारित होने वाली भाषा है तथा यह विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करती है। उन्होंने असम में हिंदी की स्थिति पर भी विस्तार से चर्चा की। साथ ही, उन्होंने प्राचार्या, विभाग प्रभारी तथा अध्यक्ष को असम की सांस्कृतिक गरिमा के प्रतीक ‘गामोचा’ से सम्मानित किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सुधा सिंह ने की। उन्होंने “हिंदी भाषा एवं साहित्य का वैश्विक संदर्भ” विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भाषा केवल संप्रेषण या व्यापार के लिए ही नहीं फैलती, बल्कि उसमें निहित सांस्कृतिक मूल्यों के कारण भी उसका विस्तार होता है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी का व्यापक प्रसार तभी संभव है, जब उसे भारतीयता का पर्याय माना जाए।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल राय ने की। इस सत्र के अतिथि वक्ता के रूप में करोड़ीमल कॉलेज के प्रो. बली सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने “हिंदी भाषा और सोशल मीडिया” विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि यदि विधिवत गणना की जाए, तो हिंदी संभवतः विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उन्होंने सोशल मीडिया की भाषा में बढ़ते इमोजी के प्रयोग पर भी उदाहरण सहित चर्चा की।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. अनिल राय ने “हिंदी भाषा में शोध की नवीन संभावनाएँ” विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि शोध कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है और इसमें धैर्य अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय में हिंदी के शोध क्षेत्र में असीमित संभावनाएँ विद्यमान हैं और शोधार्थियों को नवीन विषयों का चयन कर अनुसंधान करना चाहिए।

संगोष्ठी के अंतिम चरण में सत्र 2024–25 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की विजेता छात्राओं को प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही, छात्र पदाधिकारियों को भी प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

अंत में विभाग प्रभारी डॉ. रीता नामदेव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया, जिसके साथ ही संगोष्ठी का औपचारिक समापन हुआ। इस अवसर पर कॉलेज के शिक्षकगण, शोधार्थी एवं छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

भगिनी निवेदिता कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
हिंदी विभाग द्वारा आयोजित
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
23 सितम्बर, 2025
हिंदी भाषा की समृद्धि : संभावनाएं और चुनौतियां

संभावनाएं और चुनौतियां
अनिल राय